अंक-12 वर्ष-2015 अलख दिसंबर-2015

विषय सूची

01. सम्पादकीय 01
02. प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरूदेव स्वामी श्री अलखानंद जी महाराज 02
03. ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ 11
04. Dhammapada 13
05. अलख ज्यन्ति-एक झलक 14
06. जीर्ण कब्ज के ईलाज 15
07. श्री गुरू पर्व 16
08. ਸਮਾਂ ਸੰਭਾਲੋ 16
09. सत्संग सूचनाएं 16
10. डाक शिकायत संबंधी सूचना 16

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर (होशियारपुर)
पिन—146105
website:-aavpashram.com
Email- aavpmahilpur@gmail.com

सम्पादकीय

एक बार एक झेन फकीर के पास एक भक्त चला ध्यान करने। उस फकीर के पास पहले से भी कई लोग ध्यान करने के लिए ठहरे हुए थे। उस व्यक्ति को अभी तीन चार दिन ही हुए थे कि वह चोरी करते पकड़ा गया। लोगों ने उसे फकीर के सामने लाकर उसे सज़ा देने की मांग करी पर फकीर ने उसे कुछ न कहकर छोड़ दिया।

कुछ दिनों बाद वही आदमी पुन: चोरी करते पकड़ा गया इस बार लोग फिर उसे फकीर के पास ले गये और सज़ा के रूप में उसे आश्रम से निकालने की बात कहने लगे। फकीर ने उनकी बातों पर ज्यादा ध्यान न देकर कहा, ''कोई बात नहीं। यह सुधर जाएगा।'' इतना कहकर फकीर तो चुप हो गये पर लोगों को यह निर्णय न जंचा। उन्होंने पत्र में फकीर को लिखा, ''यदि आप इसे बाहर न निकालेंगे तो हम यहां नहीं रुकेंगे।''

फकीर ने जब पत्र पढ़ा तो बहुत हंसे और सब को बुलाने की आज्ञा दे दी। जब सब लोग वहां आए तो फकीर ने उन्हें समझाया, ''आप समझदार हैं। ठीक गलत समझते हैं अत: आप किसी और के पास भी चले जाएं तो आप का काम चल जाएगा पर इसे मेरे सिवा पढ़ाएगा कौन? अत: आप जाना चाहें तो जाएं पर इसका सुधार तो मैं ही करूंगा।''

यह सुनकर वह चोर व्यक्ति फूट-फूट कर रोने लगा और कहा जाता है कि वह भी आगे चलकर जापान का प्रसिद्ध झेन गुरू बना।

तूं को मिटा इतना कि तूं न रहे तुझ में दुई की बू न रहे

अलख

गताङ्क से आगे.....

निज की कमाई ज्यादा काम आती है निज की कमाई से बोझिल नहीं होता, दु:खी नहीं होता तो मैं संतोष की बात कह रहा था। जिस घर में संतोष रूपी राजा आया वहां पर उसकी पवित्रता, दया, धर्म रूपी सेना आदि भी साथ में आ गयी। वहां शान्ति आ गई है। तो यहां पर कुसंग है, कुसंग से मतलब यही है कि दुखी है इसको भी लूट लो, उसको भी लूट लो, यह भी मेरे पास आये यह भी मेरे पास आये जिस भी प्रकार से मेरे पास आये यह जो दशा है बस यह कुसंग है।

अगर कुसंग को पाने के लिए देवता को पूजता है, यह चाहिये, वह चाहिये हे देवी मां यह काम हो जाये वह काम हो जाये, पूजा की, फूल चढ़ाये, चन्दन लगाये, धूप-अगरबत्ती की, कुछ जय जय कार बुला ली, चंचल तो है ही, एक देवता को बुला रहा था, दूसरे को और बुलाने लग गया फिर तीसरे को बुलाने लग गया फिर और किसी को फिर और किसी को कह रहा है तेरी जय, किसी को कह रहा है तेरी जय, न मालूम वह किधर किधर को चला गया, जरा इन बातों को खोजो कि जो कुछ भी पूज रहा है बदले में मांग है कुछ अर्थ सिद्ध न होगा, सारा जीवन बीत जायेगा। ज़रा इन बातों को रूक कर टिक कर खोज। तो जब तक हृदय भिखारी है, शान्ति नहीं आयेगी तो तूं संतोष कर अपने आपे में लौटकर आना है और जिस भी हाल में है इसी हाल में मस्त होना, आनंदित होना सहज आनन्दित होना तब खैर कहने जा रहे थे वह आनंद का झरना, यह पहला लक्ष्ण सत्संगी का है, सत्संगी है फिर वह अपना नफा-घाटा देखने लगता है। मैं क्या कर रहा हूं? दूसरों के साथ मैं क्या व्यवहार कर रहा हूं? क्योंकि आप शांति में रहेगा तो ही औरों को शांति पहुंचाएगा तो खुद भी शांत रहेगा। खैर कहने जा रहे थे:—

हानि कुसंग सत्संगति लाहू,
लोकहू वेद विदित सब काहू।

कुसंग से हानि ही होती है और सत्संग से लाभ ही होता है। अगर सत्संगी हो जाये तो फिर सत्संग की भूख नहीं मिटती, जिसको सत्त की भूख लग जाये वह तो फिर इस भवसागर से तैर कर ही रहता है। पहले भवसागर से तैरता है, धीरे-धीरे भवसागर सूखने लग जाता है, गाते तो हो:—

नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं,
करो विचार सज्जन मन माहिं।
राम एक तापस तिया तारी।

तापस तिया, तिया यानि स्त्री, तापस यानि तपस्वी की स्त्री, गौतम ऋषि की पत्नी जो कपट से छली गई उसका कोई कसूर नहीं था। क्योंकि ठग ने गौतम ऋषि का रूप धारण कर ऋषि पत्नी से छल किया व ऋषि ने आते ही उसे श्राप दे दिया तो ऋषि पत्नी ने कहा कि आपने मुझे श्राप तो दे दिया जबकि मेरा कोई अपराध भी नहीं था पर मेरा उद्धार कब होगा? तब ऋषि ने कहा कि त्रेता युग में भगवान के अवतार श्रीराम होंगे और उनके चरण तुझे स्पर्श करेंगे और तेरा उद्धार होगा। तो ऋषि पत्नी अहिलया प्रसन्न हो बोलीं कि मुझे ऐसा श्राप मिला तो बहुत अच्छा, शुक्र है मुझे भगवान मिलेंगे

और कोई बात नहीं, बहुत प्रसन्नता से घट गई। हेर—फेर को नहीं देखा कि बड़ी देर हो जाएगी अभी तो सतयुग है। कब जाकर त्रेता होगा? तो कब जाकर मेरा उद्धार होगा? यह नहीं सोचा हृदय में बड़ी प्रबल इच्छा लेकर बस हो गई शून्य, शून्यता को चली गई। तो कहने जा रहे थे—

राम एक तापस तिय तारी,
नाम कोटि खल कूमति सुधारी।

पर कहते नाम ने करोड़ों खल कूमति यानि कूबुदियों की बुद्धि का सुधार किया। किसने? 'नाम' ने।

राम भालू कपि कटक बिटोरा।

राम ने भालू, बन्दर, रीछ इत्यादि इकट्ठे किये और सागर पर पुल बनाया व सेनाऐं पार उतरीं। पर कहते:—

''नाम लेत भव सिन्धु सुखाहिं''

कि नाम लेते ही भवसागर सूखता है। हे प्राणी! *जिन नामों को रटते हो, नामों की माला फेरते हो, रट्टे लगाते हो, इनको करते हुए बड़ी प्रबल इच्छा करके देखना। क्या इनसे कभी तैरते भी हो? क्या इनसे भवसागर सूखता है? सूखना तो दूर रहा, क्या तैरते भी हो? अगर नहीं तो आगे बढ़ो,* सत्संग से आवाज़ मिल रही है।

पूर्ण वचनों से आवाज़ दी जा रही है, सोना मत, रूकना मत, किसी का मत बन एक प्रभु का बन, एक ईश्वर का बन उसके बिना चैन नहीं। एक उसका बन, जो उसको पकड़ा देवे, जो भवसागर से तैरना सीखा दे बस वही पूजने योग्य आदरणीय है। वही फिर गुरू है वही फिर गुरूद्वारा है, सदगुरू सदन है। इसके अतिरिक्त सब छोटी बातें हैं। आगे जब तक ऐसा गुरू न मिले तो तब तक बात न बनेगी। गुरूवाणी कार कह गया:—

जब लग न देखो अपनी नैणी।
तब लग न मानो गुरू की वाणी।।

जब तक अपनी आंखो से तूने नहीं देख लिया तब तक भवसागर से नहीं तैर गया। क्योंकि पहले तैरेगा तो आगे सूखेगा भी, आगे बढ़ो, रूकने का स्थान ही नहीं, तो फिर 'नाम' कुछ ऐसा है जो भवसागर से तैराता है। नाम जिससे भवसागर सूख जाता हो।

नाम लेत भवसिन्धु सुखाहिं।
करो विचार सज्जन मन माहिं।।

हे सज्जनों विचार करो, सब के बस का विचार करना तो है नहीं, सज्जन लोग विचार कर पाते हैं। क्योंकि जो वृत्तिधारी है बहुत ही चंचल है, कहीं भी उसका मन रूकने टिकने का नहीं होता। एक क्षण भी उसका मन नहीं टिकता। कौए की तरह उसकी भाषा होती है कौआ बड़े कर्कश स्वर में कां-कां करता है। कोई तथ्य सुपथ्य की बात नहीं, जब बोले तो कोए की भांति ही। अगर कोई सुनाये तो समझ ही नहीं पाता, कुछ समझ या पकड़ ही नहीं पाता और तब क्या करना चाहिए? सार अनुसार कुछ भेद निकलता ही नहीं, अगर तो उसकी दूसरी मति मूढ़ भी है, मूढ़ क्या? जो उचित निर्णय है वह नहीं ले पाता कि क्या पकडूं और क्या छोडूं? छोड़ने और करने की बात भी उसको नहीं पता, इस कारण से अच्छे काम से तो रह ही जाता है। एक आख्यान याद आ गया—

कोई एक घनघोर जंगल में भगवान शंकर और पार्वती चले जा रहे थे। पार्वती ने देखा रास्ते में तीन प्राणी जा रहे थे तो पार्वती ने कहा कि महाराज आपका क्या घट जाएगा यदि आप इन्हें एक-एक वर दे दें। तब भगवान शंकर ने हंस कर कहा कि पार्वती किस किस को वर देते रहेंगे? ऋण बन्धु संसार है चलो अपना काम करो। तब पार्वती ने पुन: भगवान से आग्रह किया कि महाराज आप तो समर्थ हैं आपका कुछ न बिगड़ेगा दे दो एक एक वर।

पार्वती के हठ को देख कर प्रभु बोले अच्छा वर दे देते हैं। तब पार्वती ने उन तीनों प्राणियों को बुला कर कहा कि तुम जानते हो कि यह कौन हैं?

चुंकि वृत्ति है पता नहीं बोलना कैसे है? क्या कहना है? क्या कहा गया कोई अर्थ नहीं। देखते रहे बिटर-बिटर कुछ जबाव नहीं, **कभी कोई संगत नहीं न माता-पिता ऐसे मिले न कभी ऐसी संगत ही मिली,** तब फिर पार्वती जी ने कहा कि यह भगवान शंकर हैं। तुम तीनों एक-एक वर मांग लो, जो तुम्हें चाहिए। सबसे पहला वर स्त्री ने मांगा कहती कि मैं सुंदर महारानी बन जाऊं। भगवान बोले—तथास्तु अर्थात ऐसा ही हो। अत्यन्त शुद्ध संकल्प था कहते ही पूरा। किसी का देर से भी होता है। *तो भगवान शंकर थे सर्व समर्थ थे आदि गुरू हैं सब गुरूओं के भी गुरू हैं*। तो वह स्त्री वर के फलस्वरूप महारानी हो गई। कोई राजा शिकार खेलते-खेलते हाथी पर चढ़ा आ रहा था। उसने देखा कि सुन्दर स्त्री है और आदेश दिया कि हाथी रोको उसको हाथी पर बैठा कर चलने लगा तो पार्वती ने आदमी से कहा कि तूं भी वर मांग ले।

आदमी उलझ गया इसमें, कि मेरी पत्नी को लिये जा रहा है। वह बेचारा छोटी सी बात में उलझ गया और कहता कि यह स्त्री सुअरी बन जाये अपना कीमती वर बेकार कर दिया। *संगत के बिना अकल नहीं आती, संगत के बिना अकल मलीन है, दूषित है।* तब उसी समय भगवान ने कहा—तथास्तु, ऐसा ही हो। अब के फलस्वरूप वह रानी सुअरी बन कर हाथी से कूद पड़ी, नीचे गिर कर लगी खुर खुर करने और लगी गंदगी खाने। इसके बाद लड़के को कहा कि अब तूं भी वर मांग ले, उसने देखा कि मेरी मां सुअरी हो गई है तो कहा कि हम जैसे थे वैसे ही हो जायें। तो भगवान बोले कि ऐसा ही हो और वह सुअरी से स्त्री हो गई इसके साथ ही तीनों वर बेकार गए। तो शास्त्र कहता है:—

बड़े भाग्य पाईयेव सत्संगा

तो अहिलया से जब कहा कि भगवान का रामावतार होगा त्रेतायुग में उनके चरण-स्पर्श से तेरा उद्धार होगा और तूं इस श्राप से मुक्त होगी। परन्तु **संगत की थी तो बड़ी प्रसन्न हुई कि यह श्राप तो वर हो गया कि भगवान के दर्शन होंगे, और क्या चाहिये?** यह तो बड़ी अच्छी हुई। तो कहने जा रहे थे कि वृत्ति वाला कुछ नहीं कर पाता, कुछ भी नहीं समझ पाता। मूढ़ वृत्ति वाला भी कुछ नहीं समझ पाता। तो यह मूढ़ता यह जो तीन परतें हैं अगर सदगुरू मिल जाये तो तीनों परतें एक साथ हटती हैं। इनमें से दो परतें, तो अगर कोई सत्संग ध्यान से सुन जाये और बुद्धि को ठीक तरह से समझे तो तुरन्त हटती है। तीसरी परत जो मूढ़ता की है यह सदगुरू की कृपा से जब ज्ञान हुआ तो यह भी साक्षात हटती है। तो समझो कि गुरू मिल गया है।

अब आगे बढ़े, आगे चले, अब भीतर की यात्रा हो गई चरण पकड़े गये हैं। चरण कमल कह रहे थे कि चरण कमल क्या चीज़ है? परमात्मा समग्र क्या कहा जाये? किस तरफ से पकड़ें? निराकार की तरफ या साकार की तरफ से कोई पारावार नहीं। मत सोच बैठे कि मूर्तियां साकार हैं यह भूल है। मूर्ति तुझे थोड़ा सा संकेत देती है, क्या? अगर पूछना शुरू कर दिया, श्री राम कौन? हनुमान कौन, कृष्ण कौन? नानक कौन? अगर प्रश्न खड़े हो गये, तो कोई उचित वक्ता मिल जाये वह थोड़ा और आगे ले जायेगा। **खोजी बना रहा तो दर्शन कराने वाला भी मिल जायेगा और वह चरण पकड़ा देगा।** क्या पकड़ा देगा? सत्त, सत्त क्या होता है? जो तीनों काल में रहे, था, है, रहेगा। 'अविनाशी' यानि जिसका कभी नाश नहीं

होता।

सूरज भी जाएगा चन्दा भी जाएगा।
जायेंगे धरती आकाशी।
पवन और पानी दोनों ही जाएंगे,
अटल रहे अविनाशी।
सखी री मैं गोबिन्द के रंग राची।

मीरा बाई कह रही हैं कि सखी मैं गोबिन्द के रंग राची, रंग में रंग गई, रच गई मतलब भीग गई किसके? गोबिन्द के। क्या है गोबिन्द? भगवान कृष्ण को कहते हैं। गो- नाम इन्द्रियों का, बिन्द यानि मालिक इन्द्रियों का मालिक, संयम क्या दिया? चरण कमल पकड़े गये हैं? तो सबसे पहले चरण कमल क्या? इन्द्रियां, मन, बुद्धि पकड़े गये हैं रीझ गये हैं, भीग गए हैं।

पचरंग चोला पहन सखी री, झिरमिट खेलन जाती।
सखी री मैं तो गोबिन्द के रंग राची।

एक दफा गुरू नानक देव जी को किसी ने पूछा कि तूं हिन्दु या मुसलमान। क्योंकि लोग किताब खोलकर पूछते और उससे नापते हैं धर्मों के माप-दण्डों से नापते हैं। कहते हैं:—

हिन्दू कहूं तो मारीया मुसलमान भी नाहिं।
पांच तत्व का पुतला नानक मेरा नाम।।

पांच तत्व का पुतला है प्राणी मीरा बाई कहती हैं।

पचरंग चोला पहन सखी री, झिरमिट खेलन जाती।

झिरमिट क्या है? जिसमें यह भवसागर सूखे, वह किया, जिससे भवसागर लुप्त हो, वह कहां है? तेरे घट में। क्योंकि परम पिता परमात्मा ने सबसे पहले तेरे घट में वासा किया, क्योंकि वैसे तो सबके घट-घट में है, लेकिन मनुष्य का शरीर अति प्यारा है-अति प्यारा। **सब मम प्रिय सब मम उपजाये, सब ते अधिक मनुज मोहि भाये।।**

वैसे तो मुझे सारा संसार प्रिय है क्योंकि मैंने बनाया और सब मुझे प्यारे है पर सबसे अधिक मनुष्य प्यारा है।

तिन मह द्विज द्विज मह श्रुतिधारी
तिन मह निगम नीति अनुसारी।।

कहते इनमें भी द्विज प्रिय है। द्विज जिनका जन्म दूसरा हो चुका, दूसरा जन्म क्या?

जन्म जायते शूद्रा।

यानि जन्म से सब मलिन, शुद्र ही पैदा होते हैं। फिर द्विज कब होता है?

ब्रह्म जाने ते इति ब्राह्मण:

ब्रह्म को जानने से ब्राह्मण होता है और ब्रह्म को जानने की जो पहली दशा होती है वह द्विज गति होती है। द्विज गति यानि उपनयन संस्कार होना। वह विद्या लुप्त हो गई है। उपनयन संस्कार यानि परमात्मा को देखने वाला नयन खुले कैसे हे प्राणी! द्विज गति कौन देवे? जो समर्थ नेत्र खोल सके, जो भीतर की आंख खोल सके, द्विज होता है। तो कहते है पहले मनुष्य प्रिय है व मनुष्यों में जो सगुरा है, निगुरापन हटा है, अर्थात दिव्य नेत्र खुला है भगवान गीता में कहते हैं:—

न तु मां शक्य से द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुष।
दिव्यं ददामि ते चक्षु: पश्य मे योगमैश्वरम्।।

हे अर्जुन! तू इन अपने प्राकृत नेत्रों द्वारा मुझे नहीं देख सकता, मैं तुझे दिव्य नेत्र देता हूं। दिव्य नेत्र कुछ होता है। दिव्य नेत्र के बिना घोर अन्धेरा है। दिव्य नेत्र खुलने से अन्धेरा टूट जाता है। भीतर से उजाला हो जाता है। उजाले की महिमा किसी प्रकार से भी प्रमाण की कोई रूप-रेखा नहीं की जा सकती। क्योंकि उजाला कितना? जो प्रकाश भगवान कष्ण ने अर्जुन को दिखाया, उसकी बराबरी हजारों सूरज कदाचित करे। इतना उजाला गुरू नानक देव जी कह रहे हैं:—

बलिहारी गुरू आपने दियो हाड़ी सदवार।
जिन मानुष से किये देवते करत न लागी वार।।

जे सौ चन्दा उगवैं सूरज चढ़े हज़ार।
ऐता चानण होंदियां गुरू बिन घोर अन्धार।।

इतना चानण है, जिसको पूरा गुरू मिल गया दिव्य नेत्र खुला द्विजता धारण की जिसने यानि जीवात्मा और परमात्मा का मेल हो गया, लौटना हो गया है बाहरमुखी था अन्तर्मुख हो गया है तो जब अन्तर्मुख हो गया फिर इसको द्विज कहते हैं। उस द्विजता में रहे, हटे नहीं, दृढ़ता पूर्वक डटा रहे, बेमुख न होवे बाहरमुख न होवे, और कहीं चतुरता, चंचलता में न चला जाए। इसका उपाय क्या है ? **दो प्रकार के उपाय हैं। एक तो भगवान का सुमिरण, दूसरी तरफ से भली प्रकार से संयम रखते हुए सत्संग।** बाहर से मन हटे, सुमिरण में लगाए और सुमिरण ही सार है। यह सत्संग से पता चलता है अगर किसी को सत्संग से प्रेम हो जाए कि सत्संग बहुत जरूरी चाहिए। सत्संग बड़ी खास चीज़ है, अनेक प्रकार के कार्य में से समय निकाल कर सत्संग करता है उसको फिर डूबने का खतरा नहीं रहता। तो फिर कहने जा रहे थे।

सब मम प्रिय सब मम उपजाए।
सब ते अधिक मनुज मोहि भाये।।

संश्यों का काम लौट लौटकर आना। संश्य आते हैं, क्योंकि तीन गुण है:—

1. सतोगुण 2. रजोगुण 3. तमोगुण

सतोगुण प्रकाशशील है। लेकिन तमोगुण अन्धकार है। जब प्रकाश होता है तो अंधकार अपनी धाक जमाता है। किसी न किसी प्रकार से अंधकार सत्व को लौट-लौटकर धमका देता है उसको टिकने नहीं देता। एक ही घर में एक ही पिता के दो पुत्र हैं यानि सत्व और तमरूपी अन्धकार भी एक ही परमात्मा के हैं। जैसे रात भी और दिन भी परमात्मा के तो पिता को कोई अन्तर नहीं कि किसकी विजय होवे दोनों एक ही पिता के बेटे लड़ रहे हैं। अगर यह गिर गया या वह जीत गया या यह जीत गया या वह गिर गया पिता को क्या फर्क है ? तो इस प्रकार से हे प्राणी! तूं घट में जो कुछ चल रहा है, पहले खोज तूं क्या चाहता है ? अगर सत्व को चाहे तो वचन संभालना पड़ेगा, वचन मानना पड़ेगा, आज्ञा माननी पड़ेगी शास्त्र विचार करना होगा, अर्थात सत्संग में उतरना पड़ेगा। **अगर मन की मानी लड़ायेगा माया की मौज लेगा तो मेरा भाई सत्व छूट जायेगा।** माया तरह तरह से अनेक प्रकार के यत्न प्रयत्न द्वारा घेरने की खड़ी है। इस प्रकार से कहने जा रहे थे अगर सत्संग में रहेगा तो द्विज रहेगा चिरकाल तक सत्संग में रहेगा चिरकाल तक यानि सीमा ही नहीं निरन्तर कह रहे हैं सुपथ्य कह रहे हैं। शास्त्र वेद निरन्तर कह रहे हैं। भगवान कृष्ण सुपथ कह रहे हैं, लगातार हर घड़ी श्रद्धा को घटने न दे, बढ़ा और बढ़ा ऐसा जो करेगा, टिकेगा, रूकेगा तो फिर अगली बात और भी है।

सब ते अधिक मनुज मोहि भाये।
तिन में द्विज, द्विज मह श्रुति धारी।

श्रुति यानि वेद, वेद को धारण करने वाला अब वह वेद को कैसे धारण करेगा ? अगर वेद को धारण किये हुए है उसके वचन भीतर उतरेंगे ? जो द्विज होकर रहेगा, जो आज्ञाकारी है उसको उतरेंगे। उसी को फिर वेद के वचन हृदय में जाकर प्रकाश मान होते हैं। उसके हृदय के कपाट नित-नित खुलते हैं:—

तिन में निगम-अनीति अनुसारी।
तिन में मोहि प्रिय निज दासा।

एक तरफ तो यह बात दूसरी तरफ क्या कह रहा है ? शास्त्र दूसरी तरफ सारी बातें छोड़ कर कहते हैं—

तिन में प्रिय मोहि निज दासा।
जेहि गति मोर न दूसरी आशा।।

कहते उनमें से भी कौन प्यारा जो सिर्फ मेरे आश्रित है एक प्रभु के आश्रित है और कुछ नहीं जानता तो वह सिर्फ प्रभु के आश्रित रहता है। दीन होकर वह बिल्ली का बच्चा बन कर आश्रित रहता है शरणागत रहता है। अपना उसको कोई बल नहीं, कोई भरोसा नहीं, शरणागत होता है, जो ऐसी गति में उतरता है, तो खैर मैं कहने जा रहा था कि सारी सृष्टि भगवान ने बनाई पांच तत्वों से भगवान ने तेरा यह चोला बनाया? मीरा बाई कहती हैं:—

पचरंग चोला पहन सखी री झिरमिट खेलन जाती

तो झिरमिट क्या है? यह पांचों तत्वों में भी दो हैं ठण्ड़ा और गर्म, ज्यादातर तो अग्नि और पानी इन दोनों को भी सम करने वाला एक ही है। वह जो एक है वह एक सहज गतिशील है।

ऊपर जावे नीचे जावे, स्वास-2 चल जात।
संसारी नर समझे नहीं.....

तो यह भवसागर सूखता है। भवसागर नहीं रहता। भवसागर ही तो भावनाओं का आदान प्रदान भावना का आगमन ही तो तुझे बंधाये बैठा है फिर मीराबाई क्या कहती हैं:—

पचरंग चोला पहन सखी री झिरमिट खेलन जाती

झिरमिट कैसे खेलन जाती? जो दुनिया के काम थे जो झगड़े थे उनको कहा ठहरो, अभी तुम भी ठहरो, कई झगड़े हटाकर भीतर उतर गई, चूंकि भीतर उतरना ही सिखाया था गुरू जी ने।

सदगुरू मिलिया संश्य छूटा, घट पाया अविनाशी।
गावे मीरा दासी पूरे गुरू का सुन उपदेश।।

अगर न मिला पूरा तो कुछ रटा दिया, पांच सात नाम रटा दिये तो चक्कर में पड़ गया इधर का न उधर का, क्या जाने झिरमिट? भीतर गया ही नहीं, उसे क्या पता ठंडक क्या होती है? वह रटने तक ही, झिरमिट रटना नहीं, झिरमिट दो शक्तियों जो आपस में लड़ गयी हैं, एक हो गई हैं, एक दूसरे में उतर गई हैं। जिसको प्रेम कहते हैं। प्रेम है क्या? अपना आपा भुलाना परमात्मा को ताकना। बस परमात्मा को ताक रहा है बस यही तो प्रेम है, तो इसका नाम प्रेम है। जब तक अपना आपा बना रहा तो प्रेम कैसा प्रेम है? नहीं तो झिरमिट में प्रेम कर गया था झिरमिट तो प्रेम है ही।

वा झिरमिट में मिलयो सांवरा

कहीं से लाना नहीं। सांवरा है ही हर समय। सांवरा तो अकाल है, काल से परे है, काल नहीं खाता, सांवरा तो नित्त है। सांवरा लाना नहीं पड़ा किन्तु यहां पर मैं-मैं किये बैठा था जो माया के दायरे में थे, मैं-मैं शोर मचाये बैठा था। नारद ऋषि को माया ने आ घेरा। **एक** बहुत बड़े नगर के राजा की राज कन्या का स्वयंवर होना था तो नारद ऋषि गये तो राजा ने कन्या का हाथ दिखाकर पूछा कि देखो इसका भविष्य कैसा है? नारद ऋषि ने देखा व कहा कि जो इसको वरेगा वह भगवान हो जायेगा, किन्तु था क्या ''उसे भगवान वरेंगे'' परन्तु उलट कर प्रतीत क्या हुआ कि इसको जो वरेगा भगवान हो जायेगा। बात छोटी सी है, थोड़ी सी है पर उल्ट कर क्या प्रतीत हो रही है? कुछ उलटकर कपट से और कुछ कह दिया। श्री हरि के बिना सुन्दर रूप से कैसे? तो बहुत प्रेम से श्री हरि को पकुारा। हरि प्रकट हुए तो तब कह रहा है सुन्दर रूप दे दो। पहले तो सुन्दर रूप मांग लिया साथ में क्या मांगा जो रोज की दिनचर्या थी यह नित्य, रोज की परिभाषा थी, रोज की बन्दना करते हुए भी कह गया।

जेहि बिधि होवे नाथ हित मोरा,
करो सदैव दास मैं तोरा।

यह रोज की दिनचर्या थी, ऐसी वन्दनायें, तभी तो कहते आरती रोज करो वह तेरा जाप पाठ हो गया और उत्तम सुन्दर शब्द कुछ प्रार्थना करो चार-पांच दस इकट्ठे होकर करो या अकेले होकर

पर आरती बिना न रहो, दीन हुए बिना न रहो, जैसा भी समय निकालो पर करो, खैर आर्त होते समय यह कह जाता।

जेहि बिधि होवे नाथ हित मोरा,
करो सदैव दास मैं तोरा।

जिससे मेरा हित होवे भगवान क्या कहते हैं:—

जेहि बिधि होए परम हित, नारद सुनो तुम्हार
सोई हम करत न आन कछु वचन न मृषा हमार।

कहते हैं जिससे मेरा हित होवे वह करो। वह तो हित कर रहा है। परन्तु भगवान कह रहे हैं जिसमें परम हित होवे मैं वह करूंगा, मेरा वचन झूठा नहीं। नारद जी मन ही मन सोचते कि कन्या मुझे ही वरेगी। मेरे समान और कौन सुन्दर है यहां। तो स्वंयवर में पहुंच कर नारद जी राजकुमारों की पंक्ति में खड़े हो गये। तभी राज कन्या हाथ में वरमाला लिए उनके सामने से गुजरी तो उसने यह देखा बन्दर के समान मुख वाला कौन है ? तो कन्या उन्हें नकारते हुए आग बढ़ गई। लेकिन नारद जी फिर उनके आगे आ जायें। लड़की फिर आगे को हो जाए। उनकी और देखे भी नहीं। उधर गण हंस रहे थे शिवजी के गण देख रहे थे। **भगवान की कृपा भगवान ही जानेंगे तेरे को पूछकर करेंगे** पर तेरे पास कृपा की मांग हो तो उस पर कृपा शुरू होती है। तेरे पास आरती होवे। आर्त होवे दो समय, दो समय हो नहीं सकता तो एक ही समय होवे। दो समय से ज्यादा होवे तो कहना ही क्या ? तब क्या कहते हैं यह जो आदत है भगवान है भगवान हर समय हैं, लाने कहीं से नहीं। अब तो मैं-मैं-मैं मुझे या जो ख्याल बनते हैं, तो यह झिरमिट से भुलाते हैं। किस से ? उस शक्ति से, आदि शक्ति कह लो, आदि शक्ति—जगदीश्वरी कह लो, मातेश्वरी कह लो, मूल माया कह लो। तो फिर क्या कहते हैं जैसे भूली

वा झिरमिट में मिलियो सांवरा
अति खोज मिली तन गाती।

कैसे मिली, खोज की तन में थी यानि चमड़ा, मांस के टुकड़े से(शरीर) शरीर जुदा हो गई। मैं शरीर हूं। यह गति हट गई, यह किसने दिया ? सच्चे नाम ने, हे प्राणी ! नाम के समान कोई पदार्थ नहीं। सच्चा नाम बड़ी खास बात है। नाम कहां है ? तेरे भीतर। नाम का वासा सबमें-2

राम नाम सबमें करे बास, ताली संतन के हाथ

सन्त के हाथ ताली(चाबी) हो तो ताला खुलता घट का तो झिरमिट में जा सकता है। तो मीराबाई कहती हैं:—

जा के पिया प्रदेश बसत हैं, लिख$_{-2}$ भेजे पाती।
सखी री.....

भगवान यानि ईश्वर, God, अल्ला, वाहिगुरू को परदेस यानि अपनी काया से दूर देखता है, मन्दिर में, गुरूद्वारा में, मस्जिद में, तीर्थ में भी बहुत दूर या निकट का फिर और कहीं दूर-दूर जहां भी कहीं देखता अपने से जुदा देखता है। मन, चित्त जहां जायेंगे, प्रसाद चढ़ाने जायेंगे, मनौती या सुखना पूरी करने जायेंगे। किसी न किसी रूप में मानते तो हैं पर हे प्राणी ! पूर्ण सदगुरू बिना घट सूना है बुल्लेशाह कहते हैं:—

हज्ज करदियां दे गोडे थक्के,
रब्ब मिलया मदीने न मक्के।
तीर्थ गई थी नानका, मन चंचल चित्त चोर।
गई थी मैल उतारने, दस मन लाई और।

मीरा बाई कहती हैं **जाके पिया परदेस बसत हैं** भगवान श्री कृष्ण कहते हैं **ईश्वर सर्व भूतानां** ईश्वर सब भूत प्राणियों के हृदय मन्दिर में विराजमान है और भगवान श्री राम कह रहे हैं कि मनुष्य का शरीर धाम है।

साधन धाम मोक्ष करि द्वारा।

साधन धाम:— कि धाम है साधना का, यह मोक्ष

का दरवाजा है, परन्तु बिना सदगुरू के पता नहीं मिलता। मन्त्र तन्त्र रटने से हाथ नहीं आएगा, पूर्ण गुरू मिले तो झट मिलता है। हे प्राणी! इसलिए कहते हैं **सदगुरू की महिमा अनन्त** अनन्त का मतलब पारावार ही नहीं और

अनन्त किया उपकार, अन्तर लोचन उघाड़िया।

अंदर की आंख खोल दी इस कारण से कहते हैं कि

घट में है सूझे नहीं, लानत ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को, भ्यो मोतिया बिन्द।।

मोतिया बिन्द कैसे हटे ? उपनयन कैसे खुले ? महल कैसे प्रकट हो ? यह सदगुरू के बिना नहीं होता मेरा भाई मीरा बाई क्या कह रही हैं

जाके पिया परदेस बसत हैं, लिख-2 भेजे पाती।

पाती क्या व कैसे भेजे ? पाती मतलब चिट्ठी, मन की चिट्ठी, मन की तारें तो यहा-वहां माथा टेकने की बात नहीं है:—

मेरे पिया मेरे घट मे बसत हैं,
न कहीं आती न जाती।
सदगुरू मिलया संश्य छूटा, घट पाया अविनाशी।
सखी री.....

कहने जा रहे थे **सदगुरू मिलिया घट पाया अविनाशी** जिसका कभी नाश नहीं होता बस वह चरण पकड़े गए हैं तो धीरे धीरे समग्र को पकड़ने का अभ्यास करता है। अविनाशी भीतर से पकड़ा गया। अविनाशी चरण पकड़े गये इतना ही नहीं और अभ्यास और अभ्यास, ज्यों ज्यों अन्दर उतरता है त्यों त्यों और ज्यादा पकड़ता जा। इस कारण से फिर कहने जा रहे हैं सत्संग की महिमा बड़ी अनंत है और सत्संग से प्रेम हो जाये। तेरे घट में है यह बात बड़े गौर से समझनी है तो कल्याण होता है, इसमें संश्य नहीं। तो कह रहे हैं सत्संग से कभी घाटा नहीं पड़ता। सत्संग पहले चाहिए फिर चाहिए फिर चाहिए। इसमें प्रबल इच्छा करके जुटो।

बड़े भाग्य पाईयेव सत्संग,
बिन ही प्रयास होत भव भंगा।

बिना परिश्रम से भव भंग होता है। तो कहने जा रहे थे, ''रानी एक पुत्र राज्य करने योग्य भी बना सकती हो।'' जब राजा ने यह पूछा तो रानी ने तुरंत उत्तर दिया कि हां। तो रानी ने झटपट सारा वातावरण बदल दिया। चित्र कथा-कहानियां वह प्रारम्भ की जो भक्त शुद्ध अन्तकरण के थे या कर्मयोगी कह लो थे उनकी कथा कहानियों के संस्कारों में पलते बढ़ते बच्चा बड़ा होने लगा व पिता का हाथ बटाने लगा तो माता को ख्याल आया कि ऐसे तो यह भवसागर में डूबा रह जाएगा। हर समय भवसागर में चित्त रहेगा। तो चाहिए कि काया तो रहे भवसागर में पर चित्त प्रभु को दे दे। ऐसा जो करे तो यह बात बड़ी आवश्यक है ऐसा नहीं हो रहा है तो बहुत बड़ी हानि है **युक्तियों द्वारा वचनों को खोज आज्ञा मानने का प्रयत्न कर तब बात बनेगी** तब खैर कह रहे थे कि रानी ने एक कागज पर एक बात लिख कर ताबीज़ बना कर दिया और कहा कि जब कभी खास आपत्ति आ पड़े तो इसको खोलना।

इधर तो यह घटना घटी, उधर क्या होता जो सबसे बड़ा भाई था उसे यह पता लगा कि मेरे और भाई भी हैं जोकि सन्यास ले चुके हैं व कल्याण में उतर चुके हैं परन्तु पांचवा भाई अभी घर में है तब सबसे बड़े सन्यासी पुत्र ने अपने शिष्य जो राजा था उससे राजसी वस्त्र व अस्त्र-शस्त्र, सेना लेकर छोटे भाई की राज्य सीमा पर पड़ाव ड़ाला और सैनिक के हाथों सन्देश भिजवाया कि युद्ध कर या राज्या दे। पहली पहली घटना उसको जब युद्ध की आई तब थोड़ा घबराया, झिझका परन्तु तभी ख्याल आया ताबीज़ का उसे खोलकर पढ़ा। माता जी के वचन थे कि यह जगत स्वपन है, मिथ्या है और सत्य की भान्ति प्रतीत हो रहा है परन्तु इस झूठे संसार में एक विशेषता है कि

कुछ सत्त भी होता है उस सत्त का जीवन में साक्षात करना मेरा साक्षात लक्ष्य है। शान्ति का पूर्ण मार्ग है उसका साक्षात अनुभव करना। खाली कह ही न देना कि सत यह है या वह है। पहले जानना फिर जानकर चित्त उसी में देना यह तेरा सहज कर्त्तव्य है और यह ज्ञानी गुरू से होता है।

बस यह पढ़ कर उसे बहुत खुशी हुई जो पहले घबराहट हुई थी यह तो प्रसन्नता में बदल गई। तब उसने सोचा कि जब **यह जगत मिथ्या है तो उसके लिए इतना प्रयत्न करना तो क्यों न परमात्मा को खोजूं ज्ञानी गुरू को खोजूं।** यह तो कोई अपने आप ही राज्य लेने आ गया, सहर्ष कर कर वह चलने लगा वहां बड़ा भाई गद्दी पर विराजमान हो गया लेकिन जब राजा वहां से चलने लगा तो बड़ा भाई सन्यासी बोला कि कहां जाते हो? वह बोला, 'जंगल में' तब फिर पूछा जंगल में तब फिर पूछा कहां है भगवान? बोला मां कहती थी घट में है फिर उनसे सवाल जवाब हुए कि कहां है, कैसे है तो फिर बड़े भाई ने सत्संग सुनाया, सत्संग सुनाया, सत्संग सुना-सुना कर तैयारी की जब एक बात रह गई दिखाने की।

अर्जुन को बहुत बातें भगवान कृष्ण ने कहीं, **अर्जुन पूछता है कि मैं देख भी सकता हूं, जो आप कहते हैं। कृष्ण बोले तूं देख भी सकता है और मैं तुझे दिखा भी सकता हूं परन्तु इन प्राकृतिक आंखों से नहीं** मैं तुझे दिव्यचक्षु(नेत्र) देता हूं, तो दिव्य नेत्र दिया तो हे प्राणी! अर्जुन का कमल नेत्र खुला, बहुत बड़ी आंख खुली। तेरी भी आंख खुले, कुछ तो खुले। बिना खुले काम नहीं चलेगा तेरा भी अन्धकार दूर होवे, साक्षात होवे। भगवान कहते हैं ज्ञानी और मुझमें कोई अन्तर नहीं ज्ञानी मेरा ही स्वरूप है अगर ज्ञानी गुरू मिले तो ऐसा ही होता है। संश्य की कोई गुंजाईश नहीं है। सत्त, परम कल्याण वाले, बाज़ार के सौदे के वाले वचन नहीं हैं, तेरे को चापलूसी करने वाले, तेरे को रिझाने वाले वचन नहीं, **तेरे को हंसाने वाले वचन नहीं हैं हंसाएं क्यों? सिर पर तो काल खड़ा है इस कारण से कह रहे हैं इन वचनों पर विचार करेगा तो सत्संग सुन ध्यान से सुन, गौर से सुन, फिर सुन, उससे तथ्य निकलता है** जब इस प्रकार से हुआ तो राजा को ज्ञान करवाया तो बस कहा कि बहुत बड़ा मकान है, जो कमरा उचित हो, पसन्द करते हो, वहां भजन करो बस। सत्संग करो, भजन करो, फिर सत्संग फिर भजन, ऐसा होता रहा परिपक्व अवस्था होते-होते टिक गई अवस्था। जब अवस्था टिक गई तो कह भेजा कि एक मुकद्दमा है जो समझ में नहीं आ रहा है तो आकर राज्यसभा में राय दो।

इस प्रकार दो-तीन-पांच निर्णय लिये व धीरे-धीरे राज्य का भी जो जरूरी काम था वह भी करवाने लगे और भजन-ध्यान भी करने लगे तो कुछ समय पश्चात कहा कि अब हम चलते हैं राज्य लेने नहीं आये थे तुझे तो सत का राज्य देने आये थे। मैं तेरा भाई हूँ इसलिए आया था कि तू अज्ञानी न रह जाये। सो भजन करना व दुनिया के काम भी करना तो फिर कहने जा रहे थे कि बहाने है कि फुर्सत नहीं, समय नहीं निकलता यानि और सब कुछ है एक सत्त फुर्र हो गया सत्त उड़ गया है बाकि सब कुछ है यह अच्छी बात नहीं काल खाएगा, समय निकाल संगत कर।

संगत से गुण उपजे, कुसंगत से गुण जाये।
बांस फांस और मिश्री एक ही भाव बिकाए।

साधू की संगत करने वाला तोता तो मीठी बोली बोलकर सत्कार करे कि आओ जी ठंडा पानी पीयो, छाया में बैठ कर आराम करो और कुसंग करने वालों का संग करने वाला तोता वह गिन-गिन कर गाली देने लगा व पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो इत्यादि कहने लगा। तो यह सब संगत का फल है। कहते हैं:—

शेष पृष्ठ 12 पर देखें.....

ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ

ਚਲਦਾ.....

ਉਧਰ ਕੀ ਹੋਇਆ ਕਿ ਗਊਆਂ ਤਾਂ ਸ਼ਾਮ ਪੈਣ ਕਰਕੇ ਵਾਪਿਸ ਟਿਕਾਣੇ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਈਆਂ, ਪਰ ਭਾਈ ਮੰਝ ਖੂਹ ਵਿੱਚ ਹੀ ਰਹੇ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਦਰਬਾਰ ਨਾਂ ਪਹੁੰਚੇ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਸ਼ਾਮ ਦੀ ਸਭਾ ਵੇਲੇ ਬਾਕੀ ਸੇਵਕਾਂ ਤੋਂ ਪੁਛਿੱਆ ਕਿ ਅੱਜ ਮੰਝ ਕਿੱਥੇ ਹੈ ? ਉਹ ਵਾਪਿਸ ਨਹੀਂ ਆਇਆ। ਸਭ ਕੁਝ ਜਾਨਣ ਵਾਲੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਸੇਵਕਾਂ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਕੇ ਉਸ ਜੰਗਲ ਵੱਲ ਨੂੰ ਚੱਲ ਪਏ, ਜਿੱਧਰ ਮੰਝ ਗਊਆਂ ਲੈ ਕੇ ਚਰਾਉਣ ਲਈ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਰਸਤੇ ਵਿੱਚ ਅਵਾਜਾਂ ਲਗਾਉਂਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਸੀ। ਕੋਈ ਇਸ ਲੀਲਾ ਨੂੰ ਕੀ ਜਾਣ ਤੇ ਸਮਝ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਅਪਨੇ ਸੇਵਕ ਕੀ ਆਪੇ ਰਾਖੈ
ਆਪੇ ਨਾਮ ਜਪਾਵੈ ॥
ਜਹ ਜਹ ਕਾਜ ਕਿਰਤਿ ਸੇਵਕ ਦੀ
ਤਹਾ ਤਹਾ ਉਠਿ ਧਾਵੈ ॥

ਜਦੋਂ ਮੰਝ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸੁਆਮੀ ਦੀ ਅਵਾਜ਼ ਸੁਣੀ ਤਾਂ ਖੂਹ ਦੇ ਅੰਦਰੋਂ ਅਵਾਜ਼ ਦਿੱਤੀ ਕਿ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਮੈਂ ਇੱਥੇ ਹਾਂ। ਲੱਕੜੀਆਂ ਅੱਜੇ ਸੁੱਕੀਆਂ ਹਨ ਲੰਗਰ ਬਨਾਉਣਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਾਹਰ ਕੱਢ ਦਿਉ। ਸੇਵਕਾਂ ਨੇ ਲੱਕੜਾਂ ਵੀ ਕੱਢ ਦਿੱਤੀਆਂ ਤੇ ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੂੰ ਵੀ ਬਾਹਰ ਕੱਢਿਆ। ਧੰਨ-ਧੰਨ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸੇਵਕ ਨੂੰ ਛਾਤੀ ਨਾਲ ਲਾ ਲਿਆ। ਉਸ ਆਨੰਦ ਦੀ ਘੜੀ ਦਾ ਕੀ ਵਰਨਣ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਨਹੀਂ -ਨਹੀਂ। ਪੂਰਣ ਸਤਿਗੁਰੂ ਦੇਵ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਮੇਂ ਤੇ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਜਾਣ ਤੇ ਸਮਝ ਸਕਦਾ। ਪਿੱਛੋਂ ਹੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਲੋਕੀ ਗੁਣ-ਗਾਣ ਗਾਉਂਦੇ ਤੇ ਪੂਜਾ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਸਮੇਂ ਤੇ ਉਹੀ ਚੰਦ ਕੁ ਸੇਵਕ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਉਸ ਅਨਮੋਲ, ਅਕਹਿ, ਅਖੰਡ, ਬਿਅੰਤ, ਅਨਾਦਿ, ਸਰਵ-ਵਿਆਪਕ ਤੇ ਸਰਵ ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ, ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਆਪਣੇ ਘੱਟ ਦੇ ਅੰਦਰ ਕਰਵਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸੁਮਰਣ ਸਦਕਾ ਥੋੜਾ-ਥੋੜਾ ਜਾਣ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਕਿ —

ਨਿਰਾਕਾਰ ਕੀ ਆਰਸੀ ਸੰਤਨ ਕੀ ਕਰ ਦੇਹ।
ñ ÖÅÜ¯ÚÅÔ¶Á ñ Ø. Õ¯å ¯ÜÅÔÆ ¶ñ Ø ñ¶

ਸੋ ਗੱਲ ਕੀ ਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਵੀ ਸੇਵਕ ਦੀ ਸੇਵਾ ਤੋਂ ਸੰਤੁਸ਼ਟ ਹੋ ਗਏ ਤੇ ਸੇਵਕ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਕਰ ਕਮਲਾਂ ਦੀ ਛੋਹ, ਚਰਣ ਕਮਲਾਂ ਤੇ ਸ਼ੀਸ਼ ਦੀ ਛੋਹ, ਹਿਰਦੇ ਨਾਲ ਹਿਰਦੇ ਦੀ ਛੋਹ ਪਾਕੇ ਤਰ ਗਿਆ, ਨਿਹਾਲ ਹੋ ਗਿਆ ਕਿ ਮਾਲੋਮਾਲ ਹੋ ਗਿਆ। ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮੰਗ ਕੀ ਮੰਗਦਾ ਹੈ ਪਰ ਭਾਈ ਮੰਝ ਦੀ ਸੇਵਾ ਵੀ ਤਾਂ ਹੀ ਅੱਜ ਦੁਨਿਆ ਯਾਦ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਆਪਣੇ ਲਈ ਨਾਂ ਮੰਗਿਆ ਸਗੋਂ ਹੋਰ ਸੇਵਕਾਂ ਲਈ ਮੰਗਿਆ ਕਿ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਅੱਗੇ ਤੋਂ ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇੰਨੀ ਕਠਿਨ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਨਾ ਲੈਣਾ। ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਤਾਂ ਕ੍ਰਿਪਾਲੂ, ਦਿਆਲੂ, ਸ਼ਾਂਤ, ਸ਼ੀਤਲ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਕਿਹਾ ਵੀ ਕਿਸੇ ਕਵੀ ਨੇ ਹੈ—

ਨਹੀਂ ਸ਼ੀਤਲ ਹੈ ਚੰਦ੍ਰਮਾਂ, ਨਾਹੀਂ ਸ਼ੀਤਲ ਕੋਇ।
ਸ਼ੀਤਲ ਤੋਂ ਹੈਂ ਸੰਤਜਨ, ਨਾਮ ਸਨੇਹੀ ਹੋਇ॥

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੂੰ ਵਰ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਤੂੰ ਸੇਵਕ ਦੀ ਮਿਸਾਲ ਕਾਇਮ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਦੁਨਿਆਂ ਸਦਾ ਯਾਦ ਰਖੇਗੀ।

'ਮਨੁ ਬੇਚੇ ਸਤਿਗੁਰ ਕੇ ਪਾਸਿ।।
ਤਿਸ ਸੇਵਕ ਕੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸਿ॥
ਸੇਵਾ ਕਰਤ ਹੋਇ ਨਿਹਕਾਮਿ॥
ਤਿਨ ਕਉ ਹੋਤ ਪਰਾਪਿਤ ਸੁਆਮਿ॥
ਅਪਨੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਿਸੁ ਆਪ ਕਰੇਇ॥
ਨਾਨਕ ਸੋ ਸੇਵਕ ਗੁਰ ਕੀ ਮਤਿ ਲੋਇ॥

ਸੇਵਕ ਵੀ ਸੋਈ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਸੁਆਮੀ ਦੀ ਮਤੀ ਅਨੁਸਾਰ ਆਪਣੇ ਆਪੇ ਨੂੰ ਢਾਲ ਕੇ ਚੱਲਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਮਨ ਦੀ ਮਤੀ ਨਹੀਂ ਚਲਾਉਂਦਾ। ਫਿਰ ਉਹ ਜਿਸ ਵੀ ਕੰਮ ਨੂੰ ਹੱਥ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਗੁਰੂ ਕ੍ਰਿਪਾ ਦੇ ਨਾਲ ਸਫ਼ਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸੋ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੇ ਆਪਣੀ ਮਤੀ ਦਾ ਤਿਆਗ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਸੁਆਮੀ ਦੀ ਮਤੀ ਅਨੁਸਾਰ ਆਪਣੀ ਕੀਮਤੀ ਸੇਵਾ ਦਾ ਲਾਭ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ ਤੇ ਮਨੁੱਖੀ ਜਨਮ ਦਾ ਟੀਚਾ ਵੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ।

ਸੋ ਪੂਰੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੋਣਾ ਵੀ ਬਹੁਤ

ਉੱਚੇ ਭਾਗਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ। ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਆਕੇ ਜੀਵ ਇਧਰ ਉਧਰ ਭਟਕਦੇ ਹੀ ਆਪਣਾ ਹੀਰੇ ਜਿਹਾ ਅਨਮੋਲ ਜਨਮ ਹੱਥੋਂ ਗੁਆ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਫਿਰ ਜੇ ਗੁਰੂ ਮਿਲ ਵੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਕੋਈ ਵੱਡਿਆਂ ਭਾਗਾਂ ਵਾਲੇ ਇਸ ਦਾ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਲਾਭ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਕਈ ਜੀਵ ਮਾਇਆ ਦੇ ਪ੍ਰੇਰੇ ਜਾਂ ਆਪਣੀ ਮਨਮਤੀ ਦੇ ਕਰਕੇ ਗੁਰੂ ਦਰਬਾਰ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿਚੋਂ ਬਾਹਰ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਤਾਂਹੀ ਤਾਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ—

"ਸੇਵਕ ਕੂਕਰ ਗੁਰੂ ਦਾ,
ਮੋਤਿਆ ਵਾ ਕਾ ਨਾਂਉ।
ਡੋਰੀ ਲਾਗੀ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ,
ਜਿਤ ਖੀਂਚੇ ਤਿਤ ਜਾਉ॥
ਦੂਰ—ਦੂਰ ਕਰੈ ਤੋ ਬਾਹਿਰੈ
ਤੂਈ—ਤੂਈ ਕਰੇ ਤੋ ਆਏ॥"
ਜਿਉਂ ਗੁਰੂ ਰਾਖੇ ਤਿਉਂ ਰਹੇ,
ਜੋ ਦੇਵੇ ਸੋ ਖਾਏ॥

ਉਪਰੋਕਤ ਲਿਖੇ ਕਥਨ ਅਨੁਸਾਰ ਜੋ ਚੱਲੇ, ਫਿਰ ਉਹੀ ਸੇਵਕ ਹੈ। ਸੇਵਕ ਦਾ ਵਾਲ ਵਿੰਗਾ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਕਿਉਂਕਿ ਸਿਰ ਤੇ ਪੂਰਨ ਸੁਆਮੀ ਦਾ ਹੱਥ ਹੈ, ਉਹ ਆਪ ਆਪਣੇ ਸੇਵਕ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲ ਲੈਂਦੇ ਹਨ।

'ਸੇਵਾ ਗੁਰੂ ਦੇ ਦਰ ਦੀ ਹੈ ਬੜੀ ਔਖੀ, ਗੱਲਾਂ ਕਰਨੀਆਂ ਫੇਰ ਸੁਖੱਲੀਆਂ ਨੇ। ਮਨ ਮਾਰ ਕੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕੀਤੀ ਸੇਵਾ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਸੇਵਕਾਂ ਨੇ ਮੰਜਲਾਂ ਮੱਲੀਆਂ ਨੇ।''

ਲਿਖਣਾ ਕਹਿਣਾ ਤੇ ਸੁਣਾਉਣਾ ਵੀ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇਹ ਵੀ ਗੁਰੂ ਦੇਵ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਾਲ ਸੇਵਾ ਹੀ ਹੈ। ਗੁਰੂਦੇਵ ਕਥਨੀ ਛੁਡਾ ਕੇ ਕਰਨੀਧਾਰੀ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਤਾਂ ਹੀ ਸੇਵਾ ਔਖੀ ਹੈ।

ਕਿਉਂ ਕਿ ਇਸ ਦਰਵਾਰ ਵਿੱਚ ਵੀ ਇਹੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਕਹਿਣਾ ਹੈ, ਉਹ ਆਪ ਕਰੋ। ਬਾਕੀ ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਆ ਦਾ ਤਾਂ ਦਸਤੂਰ ਆਸਾਨ ਹੈ। ਮੂੰਹ ਨਾਲ ਸਾਰੀ ਭਗਤੀ ਕੀਤੀ ਤੇ ਕਰਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਨਾ ਸਿਰ ਉਤੇ ਕੋਈ ਪੁੱਛਣ ਵਾਲਾ ਹੈ। ਤਾਂ ਹੀ ਤਾਂ ਭੀੜਾਂ ਹਨ। ਪੂਰੇ ਗੁਰੂ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਵਿੱਚ ਮਾਨ ਨੂੰ ਮਿਟਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਨੀਵਾਂ ਮਨ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨੇੜੇ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

''ਸਤਗੁਰੂ ਦੀ ਸ਼ਰਣ ਵਿੱਚ ਜਾਣ ਲਈ, ਹਸਤੀ ਨੂੰ ਮਿਟਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਗਮ ਨੂੰ ਫਰਿਸ਼ਤੇ ਮਿਟਾ ਨਾਂ ਸਕੇ ਉਸ ਗਮ ਨੂੰ ਮਿਟਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।'' ਜ਼ਰਾ ਹੋਈ ਗਲਤੀ ਜਾਂ ਨਜ਼ਰ ਚੂਕੀ, ਚੋਰਾਂ ਨੇਂ ਸਭ ਦੌਲਤ ਲੁਟੀ, ਗੁਰੂ ਗਿਆਨ ਕਾ ਦੀਪਕ ਹਿਰਦੇ ਚ ਦਿਨ ਰਾਤ ਜਗਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

"ਗੁਰੂ ਨਾਮ ਹੈ ਗਿਆਨ ਕਾ, ਸ਼ਿਸ਼ ਸੀਖ ਲੇ ਸੋਈ।
ਆਤਮ ਗਿਆਨ ਕੇ ਬਿਨਾਂ, ਗੁਰੂ ਔਰ ਸ਼ਿਸ਼ ਨ ਹੋਈ॥"

पृष्ठ 10 का शेष.....

वाणी तो इतनी कही, जितना बालू रेत।
चौरासी के जीव के एक न लागी हेत।।

जो अपना कल्याण आप नहीं चाहता तो उसे वचन नहीं चुभते।

साखी शब्द बहुत सुना, मिटा न मन का दाग।
संगत से सुधरा नहीं ताका बड़ा अभाग।।

बहुत बड़े दुर्भाग्य को हटाना है तो संगत करनी ही पड़ेगी, संगत करके ही कपाट खुल सकते हैं। यह नहीं कि नही हो सकता है, यहां पीछे नहीं लगाया जाता। यहां तो साक्षात होता है। तूं भी करेगा तो होगा।

तत्त् सत्त हरि ओम।

cont....

Dhammapada

Subhanupassim viharantam indriyesu asamvutam
bhojanamhi camattannum
kusitam hinaviriyam tam ve pasahati Maro[1]
vato rukkhamva dubbalam.

He who keeps his mind on pleasant objects, who is uncontrolled in his senses, immoderate in his food, and is lazy and lacking in energy, will certainly be overwhelmed by *Mara* just as stormy winds uproot a weak tree.

Asubhanupassim viharantam indriyesu susamvutam
bhojanamhi ca mattannum
saddham[2] araddhaviriyam tam ve nappasahati
Marovato selamva pabbatam.

He who keeps his mind on the impurities (of the body), who is well-controlled in his senses and is full of faith and energy, will certainly be not overwhelmed by *Mara*, just as stormy winds cannot shake a mountain of rock.

The Story of Thera Mahakala

Mahakala and Culakala were two merchant brothers from the town of Setabya. While travelling about with their merchandise on one occasion, they had a chance to listen to a religious discourse given by the Buddha. After hearing the discourse Mahakala asked the Buddha for admission to the Order of the bhikkhus. Culakala also joined the Order but with the intention of coming out of the Order and to bring out his brother along with him.

Mahakala was serious in his ascetic practice at the cemetery and diligently meditated on decay and impermanence. He finally gained Insight and attained arahatship.

Later, the Buddha and his disciples, including the brothers, happened to be staying in the forest of Simsapa, near Setabya. While staying there, the former wives of Culakala invited the Buddha and his disciples to their house. Culakala himself went ahead to prepare seating arrangements for the Buddha and his disciples. Once there, the former wives of Culakala made him change into lay clothes.

The next day, the wives of Mahakala invited the Buddha and his disciples to their house hoping to do the same with Mahakala as the wives of Culakala had done to Culakala. After the meal they requested the Buddha to let Mahakala remain to "express appreciation" (*anumodana*). So the Buddha and the other disciples left. Arriving at the village gate the bhikkhus

Contd. on Page no.15.....

अलख ज्यन्ति समारोह—एक झलक

''संतो सदगुरू अलख लखाया—अपन में अपना आप दर्शाया।''

आईये चलते हैं वचनों की यात्रा पर जहां उस आनंद की अनुभूती की कुछ महिमा का वर्णन हो सक रहा है। एक ऐसा प्रयास किया जा रहा है कि जिसमें वचनों के द्वारा श्री अलख अवतार सदगुरू देव की पावन महिमा को समझा जा सके

जालंधर के श्री अन्नपूर्णा मंदिर में आयोजित इस महान सत्संग में श्री कृपा से सराबोर शाखा के सब प्रेमी सज्जनों का उत्साह सतसंगत का एक प्रत्यक्ष उदाहरण रहा जिन्होंने दिन रात निरंतर तन- मन-धन से इस सेवा कार्य को पूर्ण रूप दिया। तैयारियां कब से चल रही थी यह तो कहना थोड़ा मुश्किल होगा क्योंकि भक्तगण अनेक वर्षों से प्रयासरत्त थे कि ऐसे महान सत्संग के महान प्रवचनों का प्रवाह जालंधर में भी बहे परन्तु वो समय आया इस वर्ष जब जालंधर की धरती का भाग्योदय हुआ।

9 तारीख को प्रात: जब तक प्रभु भक्तों का आगमन शुरू हुआ। तब तक सेवा में उपस्थित प्रेमी जन सब प्रकार से प्रबंध कर चुके थे। पूर्ण प्रवचनों एव महान अनुभवी सदगुरू देव की ज्यन्ति का साक्षी बनने के लिए तैयार अन्नपूर्णा मंदिर की शान देखते ही बनती थी। जहां ''**जां बोले तां ब्रह्मज्ञान एहि निश लागा रहे ध्यान**'' के अनुसार सेवा कार्य एवं प्रभु भजन सम रूप से चल रहा था। निश्चित समय पर गुरू बंदना से शुरू होते हुए कार्यक्रम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा था त्यों-त्यों भक्तों में उल्लास भी देखने लायक था। भजन गायन के उपरांत श्री गुरू महाराज जी का पंडाल में जय-जय कार से आगमन हुआ और शुरू हुई वह प्रवचन धारा जिसका आनंद लेने के लिए देश विदेश से भक्तगण भाग लेने आए थे।

श्री गुरू महाराज जी ने प्रवचनों में मानव जीवन की प्राप्ति के उद्देश्य पर जो सद विवेचन दिया ऐसा विवेचन शास्त्रों में भी नहीं। ज्ञान एवं विज्ञान को समान रूप से वर्णित करते हुए उन्होंने इसी बात पर जोर दिया कि जिसे मानव जीवन का लक्ष्य समझने का प्रश्न जाग गया उसे ही अध्यात्म की गहराई समझ आती है।

रात्रि विश्राम के बाद प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में भगवद भक्त गुरू पूजन के लिए ऐसे तत्पर थे कि

मन में माची खलबली कब निरखूं घनश्याम।
नारायण भूला सभी खान पान विश्राम।।

श्रद्धापूर्वक श्री गुरू पूजन का आनंद लेना ही परम सौभाग्य की बात है।

गुरू पूजन सो जन करें जिसके पूर्ण भाग।
अलख कहे गुरू ईश है, तिन की सेवा लाग।।

अल्पिक आहार एवं विश्राम के बाद शुरू हुआ सत्संग प्रवाह जिसमें सदगुरू देव ने सत-असत का निर्णय देते हुए समझाया कि माया से झगड़ने की नहीं बल्कि उसे समझने की जरूरत है।

माया छाया राम की, मन में लेय विचार।
अलख लखैं जो जन तरैं, आपा ही है सार।।

जो समझ गया, वह माया को मुसीबत नहीं बल्कि सहायक के रूप में प्रयोग कर जाता है। जो भोगने चल पड़े उसके लिए यही माया भंवर है और जो योग में उतरे उसके लिए है नाव।

राम भजन अति गहन है, पात-पात में पात।
निर्णय तो वही कर सके जो लखे अलख की बात।।

गताङ्क से आगे.....

❋ जीर्ण-कब्ज के ईलाज ❋

09. प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्सा केवल उन लोगों के लिए जरूरी है जिनको कब्ज लम्बे समय से हो एवं आंतें अति दुर्बल हो गयी हों। अर्थात् उनका जीर्ण कब्ज-अतिसार, पेंचिस, कोलाइटिस (आंतों की सूजन) जीर्ण बवासीर, अग्निमाद्य, एसीडीटी (अम्लता), आमाशय की सूजन एवं आंत के कैंसर में बदल चुका हो। इन रोगियों को रसाहार, फलाहार, अल्पाहार या बिना आग का पका भोजन पर कुछ दिन रहते हुए निम्नलिखित उपचार चलाना होता है:—

1. नित्य पेड़ू अथवा पूरे पेट में गर्म-ठंडा सेंक (पांच मिन्ट गर्म सेंक, दो मिन्ट ठंडा सेंक) प्रात: या सांय अथवा दोनों समय या गर्म ठंडा कटि स्नान।
2. नित्य पेड़ू पर मिट्टी की पट्टी या ठंडा कटि स्नान।
3. पूरे शरीर का भाप स्नान- सप्ताह में एक बार।
4. पूरे शरीर का धूप स्नान- सप्ताह में एक बार।
5. पूरे शरीर का मिट्टी स्नान- सप्ताह में एक बार।
6. पूरे शरीर का घर्षण स्नान- सप्ताह में एक बार।
7. विरेचन क्रिया या शंखप्रक्षालन- सप्ताह में एक बार।

नोट : उपरोक्त क्रियायें किसी प्राकृतिक चिकित्सक के पथ प्रदर्शन में करें तो लाभ निश्चित मिलेगा।

10. शाम भोजन से पहले—

शवासन के द्वारा दिनभर की थकान मिटाने के बाद गर्म या ताजा पानी भर पेट पीकर किंग-क्वीन करें तत्पश्चात् शौच इत्यादि से निवृत होकर भोजन करें।

11. रात सोते समय

कोई मृदु विरेचक औषधि जैसे मुनक्का, हरड़ का चूर्ण, त्रिफला का चूर्ण, दूध अथवा ईसबगोल या अलसी का सेवन करें।

....समाप्त

❋ ❋

Cont. from page no. 13

their dissatisfaction and expressed apprehension. They were dissatisfied because Mahakala was permitted to stay behind and they were afraid that, like Culakala, his brother, Mahakala, too, would be made to leave the Order by his former wives. To this, the Buddha replied that the two brothers were not alike. Culakala indulged in sensual pleasures and was lazy and weak; he was just like a weak tree. Mahakala, on the other hand, was diligent, steadfast and strong in his faith of the Buddha, the Dhamma and the Samgha; he was like a mountain of rock.

Meanwhile, the former wives of Mahakala surrounded him and tried to remove his yellow robes. The thera, sensing their attitude, stood up and rising up into the air by his supernormal powers passed through the roof of the house into the sky. He landed at the feet of the Buddha at the very moment the Master was coming to the end of his utterance of the above two stanzas. At the same time, all the bhikkhus assembled there were established in Sotapatti Fruition.

Essence – MAN JEETEY JAG JEET.

To be Cont.....

श्री गुरू पर्व

श्री गुरू पर्व शुभ हो, शुभ हो, शुभ हो।
हे तत्व वेता। हे ब्रह्मर्षि। पावन पुनित। हे पुण्य के धाम।।
इस गुरू पर्व की वेला में। हे श्री गुरू वर तुम को प्रणाम।।

ज्यों सिंचत मूल को, पलवित शाखा, फल अरू पात। त्यों गुरू चरनन माहिं, है सकल सृष्टि समात।।
नैयन घट श्रद्धामृत भर, भरो तलों ताल। गुरू चरणन चित्त राखिके, ध्याइये दीन दयाल।।
जब हिय में ही जानिए, श्री गुरू बहुत निहाल। नैन पट उघारिके, श्री गुरू चरणन निहार।।
श्री चरणन की पादुका, प्रेम से ले धरो शीश। नमन करो तब विहल हो, मानो मन में ईश।।
अविरल झड़ी लगाय के, पद पखार श्री चन्द्र। जन्म जन्म की मैल धोय के, चखो आनन्द मकरन्द।।
पक्को धागा प्रेम का, बांधो गुरू के हाथ। गांठी को इतनी कसो, छुटी न सके साथ।।
लै चन्दन लग्न का, तिलक करो चित्त लाये। प्रेम पगे कुछ अकशित, करो अर्पण मन लाय।।
प्रेम की बगिया से चुनो, सुन्दर सुगन्धित फूल। गद गद हो चढ़ाइये, होय मद मस्त झूल।।
धूप, दीप, सुगंधी द्रव, गुरू कृपा से पाय। हृदय थाली धोय के, ता में लियो सजाय।।

"ਸਮਾਂ ਸੰਭਾਲੋ"

ਸਿਰ ਪਰ ਕਾਲ ਤੇਰੇ, ਤੈਨੂੰ ਸੁੱਝਦਾ ਨਹੀਂ।
ਭੰਨੇ ਕਾਲ ਹੰਕਾਰ ਹੰਕਾਰੀਆਂ ਦੇ।
ਹੁੰਝੇ ਗਏ ਜਹਾਨ ਤੋਂ ਮੌਜ ਦਾਸਾ। ਅੱਗੇ ਆਏ ਜੋ ਮੌਤ ਬਹਾਰੀਆਂ ਦੇ।

सूचनाएं

1. वेदांत प्रबोध समिति का वार्षिक कार्यक्रम 31 जनवरी 2016 को कठुआ (जम्मू) में होने जा रहा है
   पता : महाजन हॉल नज़दीक मुखर्जी चौंक कठुआ
2. रसीद काटते समय पिन कोड अवश्य नोट करें।

नोट : पावन श्री अलख ज्यन्ति महोत्सव की वीडियो डी०वी०डी(Video D.V.D)खरीदने के लिए पत्रिका स्टाल पर संपर्क करें।

By Post पत्रिका संबंधी विशेष सूचना

जो सज्जन पत्रिका डाक द्वारा मंगवाते हैं वे पत्रिका प्राप्त न होने पर aavpmahilpur@gmail.com पर मेल करें अथवा आश्रम के नाम एक पत्र लिखें उस पत्र के द्वारा वास्तविक त्रुटिकर्ता को खोजा जाए एवं आवश्यकतानुसार कानूनी कार्यवाही की जा सके।